LIBRARY

School of Planning And Architecture ,Bhopal

S.No.40 (November 2024)

Electronic Media 09/11/2024

एसपीए भोपाल में जलवायु अनुकूल निर्माण पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का समापन

सीएनएन सेंट्रल न्यूज एंड नेटवर्क–आईटीडीसी इंडिया ई प्रेस /आईटीडीसी न्यूज भोपाल- दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान, विभिन्न विषयों पर पैनल चर्चा के छह सत्र आयोजित किए गए। पद्मश्री महेश शर्मा, पर्यावरण संरक्षणवादी और सामाजिक कार्यकर्ता ने झाबुआ, मध्य प्रदेश में एक समुदाय संचालित पहल -शिव गंगा- आंदोलन पर चर्चा की, जो वर्षा जल संचयन, भूजल पुनर्भरण और वनीकरण के माध्यम से जल संरक्षण पर ध्यान केंद्रित करता है। जिसने सफलतापूर्वक स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र को पुनर्जीवित किया है और कृषि उत्पादकता में सुधार करके प्रवासन को कम किया है।

पद्मश्री जनक पलटा मैकगिलिगन, संस्थापक-निदेशक, जिमी मैकगिलिगन सेंटर फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट, इंदौर ने सतत जीवन के व्यावहारिक मॉडल पर चर्चा की, जिसमें दिखाया गया कि कैसे विशेष रूप से ग्रामीण महिलाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग, जैविक खेती और स्वास्थ्य को बढ़ावा देकर पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान कर सकते हैं।

निदेशक प्रसाद देवधर, भागीरथ ग्राम विकास प्रतिष्ठान, गोवा के संस्थापक ने ऊर्जा और स्वच्छता के लिए बायोगैस का उपयोग करने, एलपीजी पर निर्भरता कम करने और खुली आग में खाना पकाने से होने वाले हानिकारक उत्सर्जन को नियंत्रित कर स्वास्थ्य में सुधार करने पर ध्यान केंद्रित किया। निदेशक एस. विश्वनाथ, बायोम एनवायर्नमेंटल ट्रस्ट, वाटर विजडम, बेंगलुरु ने पारंपरिक वाटरशेड पारिस्थितिकी तंत्र, वर्तमान और भविष्य के शहरी और ग्रामीण जल प्रबंधन में उनकी भूमिका से अवगत किया।

उन्होंने पेयजल सुरक्षा के लिए भूजल पुनर्भरण, झीलों और कुओं सफाई, गाद उत्सव और महिलाओं के नेतृत्व वाली टैंक सफाई जैसी सांस्कृतिक प्रथाओं पर प्रकाश डाला। प्रो. चित्ररेखा काबरे, प्रोफेसर, वास्तुकला विभाग, एसपीए दिल्ली ने जलवायु चुनौतियों के समाधान के रूप में पुनर्योजी डिजाइन और बायोसेंट्रिक दृष्टिकोण की खोज की। उन्होंने ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने और पर्यावरणीय प्रभावों से निपटने में स्वदेशी वास्तुकला की भूमिका पर जोर दिया।

सुश्री सुरभि तोमर, पर्यावरण संरक्षण गतिविधि ने जैसलमेर में घरों और स्कूलों का उदाहरण देते हुए भवन निर्माण और संचालन में ऊर्जा के उपयोग पर चर्चा शुरू की। उन्होंने निर्माण सामग्री के रूप में बांस के उपयोग पर भी जोर दिया, क्योंकि इसमें स्टील की जगह लेने की क्षमता है। उन्होंने नॉर्वेजियन लकड़ी की ऊंची इमारतों का भी हवाला दिया और बताया कि उन्हें स्थानीय संशोधनों के साथ कैसे दोहराया जा सकता है।